वेदों की खुशबू

ओ३म्
(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 75	Year 7	Volume 11	November 2018 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual-Rs. 120- see page 6

आइए वैर से अवैर की ओर चलें

वैर एक पूर्णतः नकारात्मक भाव अथवा क्रिया है इसमें संदेह नहीं अतः इससे मुक्ति अनिवार्य है। यदि हम वैर–विरोध को त्यागकर समन्वय, सद्भाव अथवा मैत्री के मार्ग पर चलें तो जीवन सचमुच आनंददायक हो जाए। हम वैर का त्याग कर अवैर की ओर कैसे अग्रसर हों ये जानने से पहले ये जानना भी अत्यंत अनिवार्य है कि वास्तव में वैर क्या है? वैर के लिए अनेक पर्यायवाची शब्द मिलते हैं जैसे बैर, शत्रुता, वैमनस्य, दुष्मनी, अदावत ऐन्मिटि आदि। वैर को सही तरह से जानने अथवा परिभाशित करने के लिए ये जानना भी ज़रूरी है कि वैर किससे होता है और क्यों? वैर के संबंध में सबसे दिलचस्प बात ये सामने आती है कि वैर हमेषा अपने किसी परिचित अथवा जानकार से ही होता है। किसी अजनबी अथवा अपरिचित से कभी वैर हो ही नहीं सकता। किसी से वैर करना हो तो पहले उसे अपना बनाना होगा। जितना गहरा परिचय उतना ही गहरा वैर। पहले किसी को अपना बनाओ या बनो और बाद में पराया यही वैर है।

कोई अपरिचित यदि हमारा अहित भी करता है तो हम उससे वैर नहीं रख सकते। कर ही नहीं सकते। कोई अपरिचित व्यक्ति हम पर आक्रमण करके अथवा हमें लूटकर भाग जाता है तो हमारे पास वैर करने का कारण है लेकिन परिचय के अभाव में हम उससे वैर ठान ही नहीं सकते। तो वैर का प्रमुख तत्त्व परिचय अथवा जानकारी ही है। किसी से परिचय के कारण ही राग–द्वेष अथवा

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2016-2018

ईर्ष्या होती है और परिचय के कारण ही आत्मीयता, मित्रता अथवा शत्रुता होती है। प्रश्न उठता है कि हमारा परिचय किनसे, कैसे और क्यों होता है? हमारा सबसे अधिक परिचय तो हमारे अपने रक्त संबंधों या अन्य संबंधों में ही होता है। उसके बाद हमारे मित्र व हमारे आसपास रहने वाले व्यक्ति आते हैं। इसके बाद हम जिनके साथ काम करते हैं अथवा व्यवसाय या सेवाओं का आदान–प्रदान करते हैं वे सब लोग हमारे परिचितों में आते हैं। प्रायः हम न तो किसी के मित्र होते हैं और न शत्रु लेकिन मानवीय व्यवहार हमें किसी का मित्र तो किसी का षत्रु बना देता है। इस मानवीय व्यवहार के कुछ प्रमुख बिंदु इस प्रकार से हैं

अपेक्षाएँ : हम प्रायः दूसरों से बहुत अधिक अपेक्षाएँ रखते हैं। कई बार हम ग़लत अपेक्षाएँ भी रखते हैं। अत्यधिक अपेक्षाओं और ग़लत अपेक्षाओं के कारण ही हम लोगों को अपने विरुद्ध कर लेते हैं अथवा शत्रु बना लेते हैं। वैर से बचने अथवा वैर को समाप्त करने के लिए घर के सदस्यों व अन्य परिचितों से हम अधिक अपेक्षाएँ न करें तो हमारे संबंध अच्छे बने रह सकते हैं। हम लोगों से अधिक अपेक्षाएँ करने की बजाय यदि लोगों की अपेक्षाओं पर खरे उतर सकें तो पूरा परिदृश्य ही बदल जाए।

बेईमानी और लोभ–लालच : बेईमानी और लोभ–लालच पूरे संसार में वैर का सबसे बड़ा कारण है। यदि न्यायालयों में चल रहे विवादों का अध्ययन करें तो स्पष्ट हो जाता है कि ज़्यादातर विवाद बेईमानी के कारण ही होते हैं। जब हम किसी का हक़ मारते हैं अथवा आर्थिक शोषण करते हैं तो प्यार नहीं वैर ही बढ़ेगा। इसी प्रकार से लालच भी बेईमानी का ही एक रूप है। लोग लालची व्यक्ति के व्यवहार के कारण उसके भी शत्रु बन जाते हैं। यदि संसार में वैर–विरोध कम करना है तो हमें न केवल बेईमानी को पूर्ण रूप से त्यागना होगा अपितु लोभ–लालच पर भी लगाम लगानी होगी।

अमानत में खयानत : अमानत में खयानत बेईमानी का ही एक रूप है जिसमें किसी को आर्थिक हानि पहुँचाने के साथ–साथ उसके विश्वास को भी कुचल दिया जाता है। जब हम किसी पर मन से विश्वास करते हैं तो ऐसे में विश्वासघात करने वाले के प्रति हर प्रकार की कोमल भावनाएँ नष्ट हो जाती हैं और शत्रुता का प्रारंभ हो जाता है। तुमने मेरी दोस्ती देखी है अब मेरी दुश्मनी देखना ये फिल्मी डायलॉग चरितार्थ होने लगता है।

अहंकार : कई व्यक्तियों में अहंकार इस कदर भरा होता है कि जो लोग भी उनके संपर्क में आते हैं वे आहत हुए बिना नहीं रहते। किसी को पैसों का अहंकार होता है तो किसी को विद्वता का। किसी को रूप का अहंकार होता है तो किसी को बाहुबल का। किसी भी प्रकार का अहंकार हो वो रिश्तों को कमज़ोर करने और परस्पर वैर बढ़ाने का काम ही करता है। यदि हम चाहते हैं कि लोगों के बीच वैर–विरोध न पनपे तो हमें अपने अहंकार पर लगाम लगानी ही होगी। हमारे मन में प्रेम–भाव का संचार होना अनिवार्य है।

दूसरों को स्वीकार न करना : दूसरों के कार्यों अथवा उनके अस्तित्व को स्वीकार न करना बहुत ख़तरनाक बात है। जब हम दूसरों के कार्यों

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. **आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.**
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

सीताराम गुप्ताए ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034, फोन नं. 9555622323
Email: srgupta54@yahoo.co.in

Ananad Mimansa

Hasmukh Adhia

Divine Happiness is a virtue that is sought by all. Yet, it is destined for few. Falsely believed to be inherent in possession of material goods, name, fame, status in society, and satisfaction of our ego, Divine Happiness is beyond the grasp and understanding of most people in the world. Divine Happiness can be experienced by truly desiring it. It comes from within, when we understand its true meaning and worth. Selfishness, the pursuit of material and transitory goods and beliefs, negative feelings, anger, greed, and other emotions and habits suppress the Divine Happiness to efface from within ourselves. Divine Happiness is above all other happiness. While ego and want satisfaction may lead to temporary joy and happiness, it fails to last. Divine Happiness is permanent, and when achieved engulfs us, enabling us to face every sorrow, misfortune, and set-back in our lives with increased vigour, faith in God, and confidence.

The pursuit of truth, self-denial when loving our loved ones, righteousness, kindness, and other virtues leads us on to the path of Divine Happiness. Real happiness is ingrained in acts which are made for the good of others even if it requires sacrifice in some way by us.A disciple asks his spiritual master: "Swamiji, There are questions that come to my mind. If objects of the world, creation of God, are so beautiful, why not enjoy them, instead of having vairagya, dispassion, towards them?

With a meaningful smile, the master replies, "Yes, of course. Feel free to enjoy them, but if you understand anand mimansa, you will make a better choice." The disciple asks, "What is anand mimansa?" And Swamiji replies, "It is an understanding of the process of how we derive happiness," and goes on to elaborate on the subject.

Availability of objects creates desire in the mind to enjoy them. Desire causes agitation. Work hard to achieve those objects. When our desire is fulfilled after a lot of effort the hitherto agitated mind becomes temporarily calm, which is what we call happiness. Happiness is in that sense, absence of agitation of mind.

Example of deep sleep is given to prove this. In deep sleep, we get maximum happiness, and we always crave to go back to it every day because it gives us so much happiness. Why is deep sleep a joyous state? Because in deep-sleep state the mind is free of thought and agitation. We do not know, in our sleep, whether we are male or female, rich or poor, doctor or officer. The reason is, as scriptures say, sat-chit-anand, which is the core essence of our Atman. Self is always full of joy. But our mental patterns interfere with the flow of joy coming from within. The joy of Self is manifested better when our mind is peaceful, just as the sun's rays get better reflected in calm and steady water as compared to dirty and turbulent water.

There are two ways to make the mind happy. One is to fulfil desires related to enjoying worldly objects and second is to desist from allowing the mind to be lured. We see a beautiful lake full of lotuses and feel like going inside overlooking the possibility of crocodiles in it, asks Swamiji. Likewise, we are rarely aware of pain involved in acquiring and maintaining wordly objects. In our zeal to enjoy worldly pleasures, we forget about the side-effects experienced by us after every enjoyment?

Object-oriented happiness gives us temporary relief. They require too much effort. They stop making us happy when we see more beautiful things around, and the mind gets agitated again to achieve those objects. As they say, happiness is an interlude between fulfilment of one desire and creation of another desire in the mind. Happiness eludes us all the time, and in the race to get more and more objects – including power and position we get tired.

A wise person chooses the path of contemplation – by which mental agitation is prevented – and meditation, by which the happiness, which is at our core, is manifested for a longer time. He feels happy all the time. That is a state called purity of mind, which can come by doing punya karma, by performing one's role selflessly and carefully. Meditation also creates abundant mental peace and happiness. A person with purity of mind is always full of joy, in all situations, favourable or unfavourable.

Satsang with God

Bhartendu Sood

A man was once sitting on the bank of river, in a lonely place having absolute tranquility. His friend, who was going to attend a Satsang in nearby village, passing by, went up to him and said, “Oh! You are sitting lonely, why don't you join me for Satsang. A great seer is giving discourse.” The man replied, “I am in Satsang with my God and this Satsang with the creator of this Universe is surely far more blissful than with any mortal.”

The Satsang, what is being discussed here is neither meditation nor dhyana. In simple language it is communion with God in an environment, when you are away from your outer world. Here you share your thoughts with the One who sent you on this planet for enriching this planet with your good acts, which only you as a human are capable of performing, not other creatures like animals or sects. Such Satsang with God, aims at inner purification and making your life more purposeful for achieving the end goal which is nothing but eternal happiness. These are the moments of abandonment, self-forgetfulness and ecstasy. For some time, keep aside your family, friends, foes, wealthy possessions and feel as if you are in the lap of the creator, care taker and protector. We must always remember that we are the highest form of God's creation. We have been bestowed with sense, reason and intellect by God which no other creature has got.. God created Man 'on purpose' and 'with a purpose'. We should be driven by this thought.

Thanks giving, tera shukriya hai, is the most important part of this Satsang. We need to thank him for everything what we possess. So, we should ever be thankful to the Almighty for giving us this lifeThis is the source of eternal happiness in life. Praying for the happiness of all, and peace in all parts of Universe, is another inseparable part of this Satsang. Don'ts include---- not going with complaints and misgivings or speaking of your deprivation and inadequacies or down speaking others. Being a Creator of this universe, he knows everything. We should also strive to alleviate the miseries of the less fortunate ones. When God has given us the highest form of his creation, Mavav ka chola, Manushya, he had certain expectations from us which He can't have from other creatures.We must justify God's trust in us by ensuring that we never deviate from the moral, upright path He wants us to travel. It is for this reason, Vedas say—Manur Bhav, be a man. For this, we must continue to evolve, spiritually to be able to meet His expectation from us.

Communion with God can only breed good thoughts since God is the endless mine of good thoughts, called Bhagwan. In that companion-less solitude, the truth is realized because in your innermost being called Atma , hunger for truth is there. All great souls who realized God could achieve realization in such Satsangs only, whether it was Buddha, Nanak, Dayanand or rishis of yore whom God gave inspiration to write Vedas or other spiritual books. My question to them who are hesitant to call it a Satsang, ---- if a seer's company is Satsang, then why God's company is not, especially when seer's source of enlightenment is also God.

Try this to see the result as young girl is keen to see the difference after using any fair-making cream. If results are not coming, try to investigate the reasons. What are the distractions in your mission? Addiction to Cell phone can be the one. You start talking with your God but then mind reaches somewhere else, not very uncommon; this means you need to practice it with sole focus on the creator. This calls for Shardha and absolute faith in God. But with Abhyasa-regular practice and restrain, this obstacle can be overcome.

In Vedas it is called Braham Yagna. Maharishi Dayanand Saraswati considered it as the yagna of highest order. He would daily move to a lonely place in the bee hours and then immerse himself in this Satsang with God. Once you make it a habit, then it's bliss will not allow you to miss it and after having made it a practice you will not feel the need to go to distant places for listening to Satsang.

सब का साथ मुश्किल रास्ते को भी आसान बना देता है

स्वामी विष्वानाथ

एक बार किसी गुरूकुल के अध्यापक अपने शिष्यों के साथ जा रहे थे। रास्ते में एक बरसाती नाला था, जिस में पानी अधिक नहीं था, पानी के अन्दर के पत्थर उपर से नजर आ रहे थे। एक शिष्य ने जैसे ही उस नाले को पार करने की पहल की उस का पैर फिसला और वह बहुत मुश्किल से अपने आप को सम्भाल पाया और नाला पार किये बिना वापिस आ गया। अब दूसरा गया तो उसका भी वही हाल हुआ, फिर तीसरा और उसके बाद चौथा गया पर सभी गिरते गिरते बचे। अध्यापक यह सभी दूर से देख रहे थे, उन्होने सभी को बुलाया और कहा सभी एक दूसरे का हाथ पकड़ कर, एक चेन बना लो , और फिर नाला पार करने का प्रयत्न करो, सभी शिष्य एक दूसरे को सम्भाले हुये थे और नाला पार कर गये।

वेद के एक मन्त्र में यही कहा गया है––––––हे मनुष्य यह जीवन एक नदी की तरह है जो ऐसे पत्थरों से भरी हुई है जिस के पत्थर फिसलने वाले है। यदि एक दूसरे के सहयोग से जीवन काटोगे तो इस जीवन रूपी नदी को पार कर लोगे और यदि अकेले ही चलने की कोशिश करोगे तो पग पग पर पड़े फिसलने वाले पत्थर आपको आगे नहीं बढ़ने देंगे। इस लिये मनुष्य को एक दूसरे के सहयोग के साथ ही यह जीवन काटना चाहिये। इस के लिये यह आवश्यक है कि हमारा व्यवहार व हमारा चरित्र ऐसा हो जो कि दूसरों को हमारे नजदीक लाये न कि दूसरे हम से दूर भागें। बाणी में माधुर्य हो , दूसरों को सुख देने वाली हो न कि पीड़ा देने वाली, व्यवहार में विश्वसनियता। हम सिर्फ अपने लिये ही सहयोग की अपेक्षा न करें बल्कि दसरों को सहयोग देने के लिये भी तत्पर रहें और अधिक अच्छा होगा कि पहल करें , सत्य और न्यायपूर्ण व पक्षपात रहित मार्ग के पथिक हो। यदि हम झूठे आश्वासन ही देंगे और दूसरों के लिये जब करने की बारी आयेगी तो आप पीछे हट जायोंगे तो भी हमारे चरित्र की पहचान शिघ्र हो जायेगी। ऐसे में लोग हमें अपने साथ रखना पसन्द नहीं करेंगे, और दूर से ही सलाम का देंगे।

इतिहास बताता है कि जिन लोगों ने भी संगठन बनाये पहले उन्होने दूसरों के लिये कष्ट झेले, लोगों के विश्वास को जीता और इसी कारण लोगों की श्रद्धा के पात्र बन गये। इस लिये दूसरों को अपने साथ लेने के लिये दूसरों के लिये त्याग और तपस्या बहुत आवश्यक है। सफलता की कूंजी यह है कि एक हाथ से पकड़ो और अपना दूसरा हाथ दूसरे को पार करवाने के लिये बड़ा दो। वेद का यह मन्त्र यही शिक्षा दे रहा है।

सत्य और न्याय के पक्षधर ईश्वरभक्त सुकरात

कृष्णचन्द्र गर्ग

सुकरात ग्रीस नाम के देश मे एथेन्स नगर के निवासी थे। उनका समय ईसा से लगभग 400 वर्ष पूर्व अर्थात अब से लगभग 2400 वर्ष पूर्व का था। उस समय एथेन्स की जनता अन्धविश्वास, रूढ़ियों और गलत परम्पराओं में फंसी हुई थी। सुकरात उन्हें उस अज्ञानता से बाहर निकालने का प्रयास करते थे। इसी कारण उन्हें विष का प्याला पिलाकर मृत्यु–दण्ड दिया गया था। सुकरात पर मुकदमा एथेन्स की सारी जनता के सामने चला था। लोकतांत्रिक एथेन्स का हर नागरिक न्यायाधीश था। सुकरात 220 के मुकाबले 281 मतों से दोषी पाए गए थे। एथेन्स में एक ही दिन में निर्णय होता था। मुकदमें के दौरान सुकरात ने अपने पक्ष में जो तर्क दिए थे उन्हीं पर यह लेख आधारित है। सुकरात के शिष्य पलेटो ने उन्हें लिपिबद्ध किया था। सुकरात सत्य को और आत्मा की पवित्रता को सबसे अधिक महत्त्व देते थे। उन्हीं के शब्दों में –

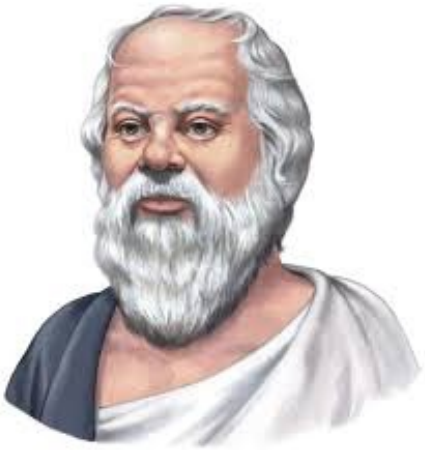

सत्य और तर्क की कसौटी पर कसे बिना किसी की बात को माना नहीं जा सकता। ..... मैं छोटी या बड़ी किसी बात को न तो छिपाता हूँ, न तथ्यों का दमन करता हूँ। ..... ईश्वर ने मुझे ऐसा करने की आज्ञा दी है। ..... देवतागण पवित्रता से प्रेम करते हैं क्योंकि वह पवित्र है, वह इसलिए पवित्र नहीं है कि देवतागण उससे प्रेम करते हैं।

एथेन्सवासियो! आप मेरे भाषण की शैली पर न जाएं। यह अच्छी भी हो सकती है और बुरी भी। आप सिर्फ इस बात पर ध्यान केन्द्रित करें कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह न्यायपूर्ण है या नहीं।

मेरा यह विश्वास है कि केवल ईश्वर ही वास्तविक रूप से ज्ञानी है और मनुष्य के ज्ञान का मूल्य नहीं के बराबर है।

मेरे ऊपर वे यह आरोप लगाते हैं कि मैं लोगों से कहता हूँ कि वे देवताओं पर विश्वास न करें। मैं नवयुवकों को भ्रष्ट करता हूँ। मैं नागरिकों के देवताओं में विश्वास नहीं करता और न देवताओं में विश्वास करता हूँ। वास्तविकता यह है कि वे सत्य को स्वीकार नहीं करना चाहते। वे ज्ञान का दिखावा करने वाले अज्ञानी लोग हैं। ..... मैं ऐसा काम कभी नहीं करूँगा जिसे मैं जानता हूँ कि बुरा है और मैं उस कार्य से भी भयभीत होकर पीछे हटने वाला नहीं हूँ जो अच्छा है।

हे एथेन्सवासियो! यदि आप मुझे इस शर्त पर छोड़ने को तैयार हैं कि मैं अपने विचारों को त्याग दूँ तो मेरा उत्तर है कि मैं ईश्वर की आज्ञा मानूँगा, आपकी नहीं। जब तक मुझ में सांस और शक्ति है तब तक मैं अपनी मान्यताओं को नहीं छोडूँगा और न आप में से प्रत्येक को यह सत्य बताने में चूकूँगा।

एथेन्सवासियो! आप मुझे छोड़ें या न छोड़ें, पर एक बात के सम्बन्ध में आप निश्चिन्त रहें कि मैं

अपने जीवन का तरीका नहीं बदलूँगा। इसके फलस्वरूप मुझे चाहे एक बार नहीं, कई बार मरना पड़े। मैंने अपनी सारी जिन्दगी आपको यह समझाने में लगादी कि आप अपनी आत्मा की पूर्णता (पवित्रता) के लिए सबसे अधिक प्रयत्न करें।

मैं आपसे यह अनुरोध करता हूँ कि आप मुझे सजा देकर ईश्वर के विरुद्ध पाप न करें। यदि आप मुझे मृत्यु दण्ड देते हैं तो आपको आसानी से मेरे रिक्त स्थान की पूर्ति करने वाला कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा। आलसी लोगों की तरह आप परेशान हैं क्योंकि आपको जगाया जा रहा है।

मानवीय आवेग पर होता तो मैं अपने सारे कामों को तिलांजलि न देता और इतने सालों से अपने निजि मामलों को बिगड़ने न देता। मैं बराबर आपकी सेवा में लगा रहा। हर आदमी को एक पिता या बड़े भाई की तरह मिलकर यह समझाता रहा कि वह सत्कार्य पर ध्यान दे। मैं यह सब निस्वार्थ भाव से, बिना किसी से पैसा लिए करता रहा हूँ।

एथेन्स या और किसी भी स्थान पर कोई भी आदमी जो जनगण की इच्छाओं का विरोध करता है और राज्य के अन्दर व्याप्त भयंकर अन्याय और अवैधता को रोकने की कोशिश करता है वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकता। जो व्यक्ति न्याय पक्ष के लिए वास्तव में लड़ना चाहता है, उसे लड़ाई निजी व्यक्ति के रूप में जारी रखनी होगी न कि सार्वजनिक व्यक्ति के रूप में।

होमर के शब्दों में ''मैं डंठलों या पत्थरों से पैदा नहीं हुआ हूँ, बल्कि एक स्त्री के गर्भ से पैदा हुआ हूँ।'' मेरे भी नाते–रिश्तेदार हैं। मेरे तीन बच्चे हैं, उनमें से एक नवयुवक है और दो अभी छोटे हैं। फिर भी मैं उनमें से किसी को आपके सामने न तो पेश करूँगा और न आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप मुझे छोड़ दें। मैंने अपनी जिन्दगी आराम से न बिताने की प्रतिज्ञा की है।

सुकरात को दोषी मानकर मृत्यु–दण्ड दिया गया।

मैं समझता हूँ कि मृत्यु से बचना उतना कठिन नहीं है जितना कठिन दुष्टता से बचना है क्योंकि दुष्टता मृत्यु से अधिक तेज है।

एथेन्सवासियो! आपने मुझे मृत्यु–दण्ड दिया है तो मैं कुछ भविष्यवाणी करना चाहता हूँ। मैं मरने जा रहा हूँ और यही समय होता है जब मनुष्यों में भविष्यवाणी करने की शक्ति अधिक होती है। मैं यह भविष्यवाणी करता हूँ कि जिन लोगों ने मुझे मृत्यु–दण्ड दिया है उन्हें इससे कहीं अधिक सजा त्योंही मिलेगी ज्योंही मैं मर जाउगा। बहुत से और लोग पैदा होंगे जो आपसे हिसाब मांगेंगे।

साधारण विश्वास के अनुसार मृत्यु एक परिवर्तन है और आत्मा की एक स्थान से दूसरे स्थान में यात्रा मात्र है। अब समय हो चुका है और हमको जाना चाहिए – मुझे मरने के लिए और आपको जीने के लिए। रहा यह कि जीवन बड़ा है या मृत्यु, इसे तो ईश्वर जानता है और केवल ईश्वर ही जानता है।

अब भी मैं वही हूँ जो हमेशा रहा हूँ, एक ऐसा आदमी जो युक्ति की सच्ची आवाज को सुनता है। वे तर्क मुझे हमेशा की तरह इस समय भी सही लगते हैं।

कौन ज्यादा मूल्यवान है – शरीर या आत्मा? हमें इस बात पर नहीं जाना चाहिए कि बहुत से लोग क्या कहेंगे। हमें सिर्फ यह सोचना

चाहिए कि जो भलाई और बुराई को समझ सकता है वह क्या कहता है और सत्य किस पक्ष में है।

क्या हम यह विश्वास नहीं करते कि आत्मा की शरीर से विमुक्ति ही मृत्यु है। आत्मा उस समय सही रूप में तर्क करती है जब वह शरीर को किनारे रख देती है। जो व्यक्ति मृत्यु को पास आते देखकर कष्ट का अनुभव करता है वह ज्ञान का प्रेमी नहीं है बल्कि शरीर का प्रेमी है। संयम का अर्थ है अपने आवेगों पर नियन्त्रण और शासन कायम रखना।

आप लोगों को तथा अपने गुरुजनों को छोड़कर जाने में न तो मुझे क्रोध है और न कष्ट। इसका कारण है कि मैं ऐसा विश्वास करता हूँ कि अगले संसार में मेरा इस संसार की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छे मित्रों तथा गुरुओं से सम्बन्ध होगा। मृतक की आत्माएं रहती हैं और मृतक फिर से जीवन प्राप्त करते हैं। शरीर को जीवित रखने वाला तत्व है आत्मा। आत्म अमर है, अविनाशी है और शरीर नश्वर है।

जिन मनुष्यों ने बेलगाम होकर पेटूपन किया, मनचलेपन से काम किया या शराबी रहे उनकी आत्माएं शायद गधों आदि पशुओं के शरीरों में जाती हैं। जिन लोगों ने अन्याय, अत्याचार, लूटमार का जीवन बिताया है उनकी आत्माएं भेड़िया, बाज और भालुओं के शरीरों में प्रवेश कर जाती हैं। ..... आत्माएं सम–स्वभाव प्राणियों के शरीर में जाती हैं।

उनमें से सबसे अधिक सुखी वे हैं जिन्होंने सामाजिक और जनहित के कार्य किए हैं अर्थात संयम और न्याय से काम लिया है। वे अपनी ही तरह मधुर और सामाजिक प्रकृति वाले प्राणियों में लौट आते हैं जैसे मधुमक्खी, तितली या चींटियां। ऐसा भी हो सकता है कि वे फिर से मनुष्य के शरीर में लौट आएं और योग्य नागरिक बनें।

बहुत थोड़े लोग ही अच्छे या बुरे हैं। अधिकांश लोग न तो अच्छे हैं और न बुरे। बहुत बड़ी और बहुत छोटी चीजों के सम्बन्ध में जो स्थिति है वैसी ही स्थिति इस मामले में है। यदि आप बहुत लम्बा या बहुत छोटा आदमी खोजें तो उसका पाना सबसे कठिन होगा। इसी प्रकार से बहुत तेज और बहुत सुस्त, बहुत नीच और बहुत उदार आदमी पाना भी कठिन होगा। अति वाले नमूने की बहुत कमी है और औसत नमूने ही अधिक और बहुसंख्यक हैं।

आपको यह जानना चाहिए कि शब्दों को गलत तरीके से इस्तेमाल करना न केवल एक दोष है बल्कि इससे आत्मा में बुराई पैदा होती है।

पीने के लिए विष का प्याला जब सुकरात को थमाया गया तब सुकरात ने बिना कांपे वह ले लिया। न तो उनके चेहरे का रंग बदला, न माथे पर शिकन आई। सुकरात ने प्रार्थना की 'इसके बाद मेरी यात्रा शुभ हो, यही मेरी प्रार्थना है।' इन शब्दों के साथ उन्होंने प्याले को अपने होंठों से लगा लिया और उस विष को शान्ति से पी लिया।

सुकरात के मित्र जो उस समय उनके पास ही थे बड़े भयभीत, परेशान तथा दुःखी थे, वे रोने लगे। तब सुकरात ने कहा कि 'मैंने सुन रखा है कि मनुष्य को शान्ति से मरना चाहिए। इसलिए आप लोग शान्त रहें।' उनके मित्रों ने रोना बन्द कर दिया और सुकरात शान्तिपूर्वक परलोक को चले गए।

831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा
0172–4010679

WE ARE PRODUCTS OF OUR PAST, BUT WE DON'T HAVE TO BE PRISONERS OF IT

Rishi Seth

India's days of glory are in the past and the only way the country can reclaim its preeminence in the global order is by going back to its ways of living in the old times, goes the common refrain of India's conservative class and Hindu nationalists. Dangerously for our country, this view has been widely supported and endorsed by leaders and members of the ruling BJP party and its cohorts like RSS, Vishva Hindu Parishad. As a consequence, policy making in recent years in sectors as varied as economy, education and healthcare among others has frequently harked back to ancient Indian knowledge and traditions.

In 2014, the central government elevated the department of AYUSH to a ministry dedicated to promoting the controversial medical sciences of ayurveda, homoeopathy and unani. Last year, it moved a bill that would allow AYUSH doctors to take a six-months bridge course to qualify for a formal MBBS degree, before sanity and a parliamentary standing committee prevailed and the provision was removed. Neither ayurveda nor homoeopathy have any scientific evidence of their efficacy to date; with the latter having been debunked widely around the world.

Propagation of Sanskrit, a language spoken by all of 25,000 Indians as per Census 2011, has been another area of focus. Back in 2014, over 70,000 students across 500 Kendriya Vidyalayas were asked to switch from German to Sanskrit as their third language of study. In 2016, the Union HRD ministry asked all IITs and IIMs to offer elective language courses in Sanskrit. Recent reports suggested the HRD ministry has prepared a plan to train five lakh Sanskrit teachers in the next four years.

At another level, our politicians and scholars have blatantly propagated myths, or what may be charitably called unverifiable statements, about the achievements of ancient Indians. Prime Minister Narendra Modi has publicly gone on record that genetic science and cosmetic surgery existed in ancient India. In 2015, Indian Science Congress hosted a lecture that examined ancient aviation technology as mentioned in the Vedas and claimed that ancient India had interplanetary planes.

Taking refuge in the glory of our ancestors offers the necessary succour to those eager to escape the grim realities of India's current status **as a poor third world country. Sure, we may have among the world's largest poor populations, dilapidated education, healthcare and justice systems among dozens of other ills, but look we flew planes and invented complex surgeries thousands of years ago!**

Simultaneously, this juxtaposition of ancient India's riches with modern India's poverty justifies the chip carried on our nationalists' shoulder and presents ready scapegoats to pass the blame: we are where we are today because of foreign invaders who unscrupulously robbed and stole from us.

To be fair, the British Raj did impoverish India. The only credible estimates available, from economist and historian Angus Maddison, show that India's share of world GDP shrunk from 24.6% to 3.8% between 1700 and 1952. However, Maddison also notes that in terms of per capita GDP, India has consistently lagged behind several European nations even 2,000 years ago. By 1700, per capita income of countries like the Netherlands and Britain was double or thereabouts that of India.

The larger point that is missed by those mesmerised with India's lost glory is that our ancient knowledge and practices were ahead of the world *at that time*. That other nations and regions have since caught up and actually raced past us even as India stagnated is perhaps a deceptively simple explanation for why India stands today where it does, but it might actually hold up to scrutiny.

An equally moot question is what India has to gain by going back to its past. Sure, all Indians want their nation to prosper. In the absence of a clear path to progress forward, a journey backward is still a journey nonetheless; a clear and obvious departure from the status quo. BJP thus must be credited with at least showing a road to prosperity to ordinary Indians, no matter how delusional it is. The rival Congress, perhaps in an act of concession to its competitor, has refused to show any vision at all – either forward or backward.

Coming back to the point of finding a scapegoat for India's current state, conservatives demonstrate a dogged refusal to accept why the foreign invaders were successful in throwing out Indian rulers in first place. There are enough history books to note that India's invaders were often more advanced than their local counterparts in warfare and administration.

Ancient India had its time in the sun, but that is over. The modern world, led by China, is playing a completely different ballgame. Other countries have shown remarkable vision to protect their economic interests in a fast changing global order. The UAE launched in 2009 an ambitious 10-year plan to teach English to locals to prepare them for a future without oil, attracting English teachers from all around the world to come and teach local children. Meanwhile, the English-speaking population of the Philippines, Indonesia and Sri Lanka has already taken over India's burgeoning BPO industry, and here we are still spending scarce resources in setting up central universities to promote an ancient language with questionable application in the modern world.

The simple question to proud nationalists and conservatives is this: How exactly are we to move forward and attain prosperity, leave alone regional or global supremacy, if we cannot take our eyes off the rear view mirror? 'We are products of our past, but we don't have to be prisoners of it,' wrote American author Rick Warren. Isn't it time for India to let go, to move on?

आप की कमाई का प्रभाव

नीला सूद

यूनान के महान फिलोसाफर पैथागोरस ने कहा था--------तुम मुझे बताओ कि कौन क्या खाता है, मैं तुम्हें बताउंगा उसका जीवन कैसा है, वह क्या सोचता है और क्या उसका चरित्र है। यह सत्य है कि आपकी कमाई का प्रभाव उन सब पर पड़ता है जो कि उस कमाई का प्रयोग करते है। जिस घर में भ्रष्ट ढंग से, दूसरों का हक छीन कर, दसरों को धोखा देकर धन आता है, वहां खुशियों का बॉस नहीं होता हैं। खुशी का अर्थ है जो कि मन को देर तक सहने वाली प्रसन्ना और शांती दें, न कि क्षणिक। हमारे शास्त्रों में अच्छे ढंग से कमायें धन को बहुत महत्व दिया है। हम गुरू नानक देव जी व भाई लालों की कहानी को जानते है। उन्होने धनी रईस मलिक भागों का खाना ठुकरा कर मेहनती मजदूर भाई लालो का खाना पसन्द किया। जब उनके साथी मरदाना ने गुरू नानक देव जी से पूछा कि भाई लालों का खाना अमृत जैसा क्यों लग रहा है तो गुरू नानक देव जी ने जवाब दिया---यह खाना सच्चाई व ईमानदारी की कमाई से आया है इस लिये अमृत तुल्य है।

इसी विषय में एक सुन्दर कहानी है। एकान्त स्थान में एक साधु रहते थे, बहुत तपस्वी और त्यागी थे, हजारों लोग उनके दर्शनों को आते। एक दिन, एक धनी सेठ ने सोचाा कि मैं भी देख कर आता हूं कि इतना पहुंचा हुआ साधु कौन है जिसके दर्शन करने हर कोई जाता है। वहां गया, तो देखा इतने पहुंचे साधु एक बृक्ष के नीचे ही रहते हैं। सर्दी और वर्षा से बचने का भी कोई साधन नहीं था। सेठ ने कहा। यहां आपको बहुत कष्ट है, आप मेरे साथ चलकर मेरे महल जैसे विशाल मकान में रहें, वहां अधिक लोग आपके ज्ञान का फायदा उठा सकेंगे। पहले तो साधु माना नहीं, परन्तु जब सेठ ने बहुत आग्रह किया तो मान गया। उस विशाल मकान में सब सुख सुविधायें थी, स्वादिष्ट भोजन, कई पकवानों के साथ मिलने लगा।

एक दिन की बात है, सेठानी अपना हीरे जवाहरात का कीमती हार कमरे के एक कोने में रख कर भूल गई। साधु महाराज वहां से गुजरे तो उनकी नजर उस हार पर पड़ी। साधु महाराज के मन में, लोभ और वैराग्य के बीच युद्ध शुरू हो गया और लोभ विजयी हुआ। साधु महाराज ने वह हीरों का हार उठा कर अपने पास रख लिया। धीरे धीरे सेठ के घर से अक्सर कीमती सामान चोरी होने लगा। सेठ ने पुलिस में रिपोर्ट द्रर्ज की और पुलिस वालों ने अपना काम शुरू किया। पुलिस इन्सपैक्टर ने कहा -----सेठ जी ऐसा लगता है आप का कोई

सेवक ही यह सब कर रहा है। साधु ने जब यह सुना तो भयभीत हो गया और सेठ जी को यह कह कर चलता बना कि उसके गुरू देव रूग्ण है। पलिस को जब इस बात का पता लगा तो साधु को भी उन्होने अपने शक के दायरे में ले लिया तलाया शुरू हुई पर साधु का पता नहीं लगा। उधर साधु परेशान वेश बदल कर ऐक जगह से दूसरी जगह भाग रहा था, परेशानी ने उसे तोड़ दिया। मन में सोचने लगा————कहां वह जीवन था जब लोग मेरे पास अपनी दुविधाओं को लेकर आते थे और आज मैने इन हीरे और सोने की कुछ वस्तुओं के कारण अपने आप को दुविधा में डाल दिया है। था तो मूल रूप से वैरागी और ज्ञानी, विचार किया, इस निश्कर्ष पर पहुंचा कि सेठ के यहां रहते वह सेठ के गलत कामों द्वारा अर्जित कमाई से खाना खा रहा था उसका प्रभाव उसके मन पर होना स्वभाविक था। निश्चय किया अभी जा कर सेठ के सारे गहने वापिस कर पष्चाताप करता हू।

कभी भी आप के घर में परेशानी है, बच्चे आप के नियन्त्रण से बाहर जा रहें है, घर का महोल खराब हो रहा है, शान्त हो कर बैठ जाईये और मनन करें ————कहीं आप का आय का साधन तो नहीं मैला हो गया? कहीं ऐसी कमाई तो नहीं कर रहें जो भ्रष्टाचार के साधनों द्वारा, किसी को लूट मार कर, दूसरों को सता कर या गलत प्रभाव डाल कर आ रही हो। ऐसा है तो उसे बदलें, सब ठीक हो सकता है क्योंकि आपकी कमाई का प्रभाव उन सब पर पड़ता है जो कि उस कमाई का प्रयोग करते है।

******

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

Talent alone is not enough

While talent is necessary for success but alone talent is not enough. Most talented people are necessarily not the most talented. It is by using focus, initiative, character, perseverance and self belief that they could maximize their innate talent.

A person with purity of mind is always full of joy, in all situations, favourable or unfavourable.

As they say, happiness is an interlude between fulfilment of one desire and creation of another desire in the mind

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

Investigate 1947 Carnage as well

It is heartening and satisfying that those responsible for 1984 carnage have been booked and punished after 34 years.. But, then it is equally important that 1947, carnage, at the time of the creation of Pakistan, in which one million people lost their lives and another million lost their livelihood and homes, is also investigated. As Sajjan/Congress stands exposed, I am sure that investigation will remove veil from the faces of those leaders whom we worship today and raise tall statues. Blaming British for every wrong has become our habit, but only fair investigation will show who the real culprits were. After all, the Hon'ble Judge in his Judgement, has called it second biggest riots since independence. Biggest being what the whole world saw at the time of Indian partition. If the second biggest, in which 3500 persons were killed, can be investigated after almost 35 years of its occurrence, why then the biggest one, in which one million people lost their lives, can't be investigated. .

One study tells that British had planned partition in June,1948, so that people of both the sides get enough time to migrate and sell off their properties to buy at other place or barter, but these leaders for their hunger of power were not prepared to wait and pre-poned the partition of country to 15th August 1947. India was not the only British Colony to get freedom , another hundred likes of Sri Lanka were also freed in line with with the agenda of UN, which came in to existence in 1945.. No where else the carnage of this proportion was witnessed, as one saw during partition of India.

If Nuremberg trials could be done to punish those who were involved in World War-II crimes then why not to investigate the biggest holocaust in the history, which took the lives of one million people on both sides of the Border. Crime never dies and this principle should hold good for 1947 carnage also

It is equally important that our future generations get to know the history in its true perspective rather than based or concocted versions, which has been the hall mark of the history makers in India.

जीवन प्रेरणा

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहां जो सोवत है,
जो जागत है सो पावत है,
जो सोवत है सो खोवत है।।

टुक नीदं से अखियां खोल जरा,
और अपने प्रभु से ध्यान लगा,
यह प्रीत करने की रीत नहीं,
प्रभु जागत है, तू सोवत है।।

जो कल करना, सो अज कर ले,
जो अज करना, सो अब कर ले,
जब चिड़ियन ने चुग खेत लिया,
फिर पछताये क्या होवत है।।

नादान भुगत करनी अपनी,
ऐ पापी! पाप में चैन कहां?
श्रब पाप की गठरी शीश धरी,
फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है।।

अपने को जानो

महेश विद्यालंकार

जमाने में उसने बड़ी बात कर ली। जिसने अपने आप से मुलाकात कर ली।

चाहे व्यक्ति कितना धनवान, बलवान, साधन सम्पन व ज्ञानी हो जाये, शास्त्र पढ़ ले, प्रवक्ता बन जाये और किताबें भी लिख ले, यदि उसमे जीने की कला, कर्मो की सुगन्ध, आत्म ज्ञान तथा परमात्मबोध नही है, तो सब कुछ बेकार है। दुनियां में अधिकांश व्यक्ति दिव्य परमात्मा को जाने बिना ही चले जाते हैं। जैसे आये वैसे ही चले गये। जिसे आत्मबोध नहीं उसे परमात्मबोध कैसे होगा? जिसने खुद को नहीं जाना, वह खुदा को क्या जानेगा? नित्य लोगों को मरते हुये देखते हैं, फिर भी अज्ञानता के कारण अपने मरने के बारें में तथा अमर आत्मा की नहीं सोचते हैं। बहुत सारे तो मुत्यु के नाम से ही कांपने लगते है। अरे भाई जिसने आना ही है उस से डरना क्या। हम स्वयं को ऐसा बनायें कि जिस प्रकार हम अतिथी का स्वागत करते हैं, वैसे ही मृत्यु का भी करें। मृत्यु अतिथी ही तो है, जिसकी आने की कोई तिथी नहीं। परन्तु यह तभी सम्भव है जब हम परमात्मा के समीप जायें। जितने हम परमात्मा से दूर होते जायेंगे, उतने भोगों, रोगों व दुखों में फसते जायेंगे।

प्रत्येक इन्सान को प्रातः उठकर तीन बातें जरूर सोचनी व दुहरानी चाहिये।

1 मैं इस दुनिया में किस लिये आया हूं? जिसलिये आया हूं उस दिशा में कुछ कर रहा हूं या नहीं? नहीं कर रहा हूं तो करने की इच्छाशक्ति व संकलप दृढ़ करना चाहिये।

2 आया हूं तो एक दिन जरूर जाउंगा। अमर होकर सदा रहने के लिये नहीं आया हूं।

3 जब जगत से जाउंगा, तो क्या साथ ले जाउंगा? साथ ले जाने के लिये धर्मकर्म, दानपुण्य, सत्कर्म आदि नहीं इकट्ठे किये तो करने की सोच व इच्छा जागृत कर लेनी चाहिये। प्राणी अकेला ही जन्म धारण करता है और अकेला ही देह छोड़ता हे। किसी को पता नहीं जीव कहां से किस योनी से आता है, और किस योनी में जायेगा। अकेला ही अपने किये हुए अच्छे और बुरे कर्मो का फल भोगता है। जन्म, बचपन, शैशव, यौवन, बृद्धावस्था और फिर मृत्यु––यह चक्र निरन्तर चल रहा है। दुनिया में रिश्ते, नाते, सम्बन्ध, भाई–बन्धु सभी मरने के बाद समाप्त हो ताते है। एक भी रिश्ता नहीं रह जाता है। केवल प्रभु का रिश्ता सदा बना रहता है। वही सच्चा और स्थाई है।

उपनिषद कहता है––उठो! जागो। अपने को सम्भालो। जिस उदेश्य के लिये यह मूल्यवान मानवजीवन मिला है, उस दिया में सोचो, समझो और आगे बढ़ो। निराश हताश नहीं होना है। जीवन की धारा को बदलना है, संसार की बातों से अपने को हटाना और की और ईश्वर में मन लगाना है। ईश्वर में मन लगाने का सही अर्थ है, ईश्वरिय गुणों को अपने में लाने का निरन्तर प्रयत्न। ईश्वर सभी प्राणियों का पिता है। उसके प्राणियों से प्यार, संवेदना व सेवा की भावना और इसी भावना के साथ उनके दुखों को वांटना भी ईश्वर को मन में लगाना है। ईश्वर में मन लगाने का अर्थ, संसार से वैराग्य नहीं है , बल्कि अपने संसारिक कर्तव्यों को काम, क्रोद्ध, लोभ, मोह व अंहकार से दूर रहते हुये पूरा करना है। इस में देश, समाज, माता पिता, मित्र , बन्धु व सम्बन्धी सभी आ जाते है। तभी जीवन उदेश्यपूर्ण होगा।

'यज्ञ मानव, समाज व देश हितकारी श्रेश्ठतम कर्म होने से सबके लिये करणीय है'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

मनुष्य को स्वस्थ एवं सुखी जीवन व्यतीत करने के लिये शुद्ध वायु, जल, अन्न, ओशधि तथा पर्यावरण की आवष्यकता है। इस कार्य को पूरा करने के लिये सृष्टि के आरम्भ से ही ईश्वर ने व उसके बाद वैदिक ऋशियों ने मनुष्यों द्वारा यज्ञ करने का विधान किया है। यज्ञ एक अत्यन्त सरल कार्य है जिस पर साधन व समय अल्प लगता है तथा लाभ जीवन भर व मरने के बाद भी मिलता जाता है। यज्ञ करना षुभ व श्रेश्ठतम कर्म है और मनुश्य जीवन को सुखों से भरपूर करने का एक सरल व सफल साधन है। यज्ञ देवपूजा, संगतिकरण एवं दान को भी कहते हैं। अग्निहोत्र में भी यह तीन कार्य अल्प मात्रा में सम्पादित होते हैं। यज्ञ में स्वयं ईश्वर हमारे भीतर व बाहर उपस्थित रहते हैं और हमें इस कार्य करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं। यज्ञ करने से याज्ञिक परिवार को सुख व शान्ति का अनुभव होता है। वायुमण्डल के सुगन्धित होने से मन में प्रसन्नता एवं उत्साह की अनुभूति एवं सन्तुश्टि का भाव बनता है। यज्ञ में जिन मन्त्रों का पाठ होता है उसमें ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना भी सम्मिलित होती है। कुछ लोग बिना कोई शुभ काम किये ही ईश्वर से अनेक पदार्थों को मांगते हैं। हमारे मूर्तिपूजक भाई भी ऐसा करते हैं। यज्ञ की प्रार्थना इससे भिन्न ऐसी प्रार्थना है जिसमें की हम वायु को सुगन्धित एवं दुर्गन्ध मुक्त करने के साथ उसके माध्यम से आकाशस्थ वर्षा जल की शुद्धि करते हैं जिससे वर्शा होने पर हमारे अन्न, ओषिधियां तथा वनस्पतियों को लाभ होता है।

सृष्टि के सहस्रों प्राणियों को यज्ञ से लाभ होता है। यही कारण हैं कि सृष्टि के आरम्भ से महर्षि दयानन्द तक जितने भी ऋषि, विद्वान व मनीषि हुए हैं सबने यज्ञ का गौरव गान किया है। हम भी यदि प्रतिदिन यज्ञ करते हैं तो निष्चय ही हमें वर्तमान जीवन सहित परजन्म में भी इससे लाभ होगा।

हम संसार में अनेक मत–मतान्तरों को देखते हैं। इन मत–मतान्तरों का ध्यान कभी इस बात पर नहीं गया कि उन्हें वायु व जल की शुद्धि करनी चाहिये। आज प्रदुषण अत्यधिक बढ़ जाने पर विज्ञानकर्मी एवं न्यायालय पर्यावरण की रक्षा की

बात कर रहे हैं। इसका कारण यह है कि मनुश्य अल्पज्ञ है और वह अनेक बातों का विचार नहीं कर सकता। यदि वैदिक धर्मियों को परमात्मा ने वेदों का ज्ञान न दिया होता तो हमारा अनुमान है कि हमारे देश के मनीशियों का ध्यान भी यज्ञ की ओर न जाता। वेदों में ईश्वर द्वारा यज्ञ करने का उल्लेख व आज्ञा होने के कारण ही वैदिक धर्मियों में यज्ञ की परम्परा का आरम्भ हुआ। ईश्वर, जीव व प्रकृति विशयक त्रैतवाद का सत्य सिद्धान्त भी वेदों की ही देन है। ईश्वर ने ही सृश्टि के आरम्भ में वेदों के द्वारा हमें अपने स्वरूप, गुण, कर्म व स्वभाव का सृष्टि के आरम्भ में परिचय कराया था। जीवात्मा का जो स्वरूप हमें उपनिशद, दर्शन, मनुस्मृति व ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में मिलता है वह भी वेदों के ज्ञान के अनुसार ही हमारे मनीषियों ने प्रस्तुत किया है। यज्ञ में आचमन व इन्द्रिय स्पर्श के मन्त्र बोल कर शरीर के निरोग व बलवान रहने की प्रार्थना की जाती है। इसके बाद स्तुति–प्रार्थना–उपासना के आठ मन्त्रों में भी हम ईश्वर के स्वरूप को जानकर उससे जीवन को उन्नत करने के लिये ईश्वर की स्तुति करते हैं और उससे सुखकारी श्रेष्ठ पदार्थों को मांगते हैं। इन आठ मन्त्रों में जो प्रार्थनायें की गई हैं, हमें नहीं लगता कि किसी अन्य मत–मतान्तर में ऐसी महनीय स्तुति व प्रार्थनायें हैं? इस दृष्टि से आर्यसमाज के वैदिक धर्मी लोग भाग्यशाली हैं जिन्हे प्रतिदिन प्रातः व सायं इन मन्त्रों से स्तुति–प्रार्थना–उपासना करने का अवसर प्राप्त होता है। स्तुति–प्रार्थना–उपासना के आठ मन्त्रो के बाद स्वस्तिवाचन एवं शान्तिकरण के मन्त्रों से भी ईश्वर की स्तुति व प्रार्थना की जाती हैं। यहां भी ईश्वर से अनेक उत्तम पदार्थों की याचना की जाती है। इसके बाद दैनिक व विशेष यज्ञ किया जाता है। सभी मन्त्रों का अपना महत्व है। विशेष यज्ञ करते हुए हम प्रथम समिधादान में व पांच घृताहुतियों में एक ही मन्त्र का उच्चारण करते हैं। इस मन्त्र को लिखकर हम इसका अर्थ दे रहे हैं। इस मन्त्र में ईश्वर से जो प्रार्थना की गई है, वह हमें अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। इसके बाद हम स्विष्टकृदाहुति मन्त्र के अर्थ को भी प्रस्तुत कर रहे हैं। पाठकों से हम इनके भावों पर ध्यान देने का अनुरोध करते हैं।

पंच घृताहुति का मन्त्रः ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पषुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे–इदन्न मम।। इसका अर्थ हैः हे सब पदार्थों में विद्यमान परमेश्वर! मेरा आत्मा तुझ परमेष्वर के लिये इस यज्ञ में समिधा के समान है। इस यज्ञ के द्वारा तू मुझमें प्रकाशित हो, अवश्य बढ़े और हमको भी बढ़ाये। हमें पुत्र–पौत्र, सेवक आदि अच्छी प्रजा से, गौ आदि पशुओं से, वेद–विद्या के तेज से और धन–धान्य, घृत, दुग्ध, अन्न आदि से समृद्ध कर। यह सुन्दर आहुति सम्पूर्ण पदार्थों में विद्यमान ज्ञानस्वरूप परमेश्वर के लिये है, यह मेरे लिये नहीं है।

स्विश्टकृदाहुति मन्त्रः ओ३म यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निश्टत् स्विश्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विश्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विश्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायष्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।। इदमग्नये स्विश्टकृते–इदन्न मम।। इस मन्त्र का अर्थः इस यज्ञकर्म में मैंने जो कुछ विधि से अधिक किया है अथवा जो कुछ भी विधि से न्यून किया है, शुभ इच्छाओं को पूर्ण करने वाला परमात्मदेव सब

शुभ इच्छाओं को जानता है, वह मेरी सभी शुभ इच्छाओं को पूर्ण कर देवे। शुभ इच्छाओं को पूर्ण करनेवाले, यज्ञ को सफल बनाने, सब प्रायश्चित्तरूप दी गई आहुतियों एवं कामनाओं को पूर्ण करनेवाले परमेश्वर के लिए यह आहुति है। वह परमात्मा हमारी सब कामनाओं को पूर्ण करे तथा श्रद्धा से किया गया मेरा यज्ञकर्म उनकी कृपा से सदा सफल हो। यह आहुति कामना पूर्ण करने वाले जगदीश्वर के लिए सादर समर्पित है। इसमें मेरा कुछ नहीं है।

यज्ञ के द्वारा एक ओर हम वायु, जल, मन, आत्मा आदि की शुद्धि करते हैं, अपने षरीर को स्वस्थ रखने की चेश्टा करते हैं वहीं मन्त्रों में जो श्रेश्ठतम विचार व प्रार्थनायें हैं, उसको बोलकर हम भीतर व बाहर विद्यमान सब ऐश्वर्यों के स्वामी परमेश्वर से इहलोक व पारलौकिक सुख की कामना करते हैं। यज्ञ को ऋषियो ने श्रेष्ठतम कर्म कहा है और वस्तुतः यह है भी। हम यह भी निवेदन करना चाहते हैं कि यज्ञ में ईश्वर से जो प्रार्थनायें की जाती हैं वह पूर्ण होती है बशर्ते की हममें ईश्वर से उन्हें प्राप्त करने की पात्रता हो। यह भी ध्यातव्य है कि हमारे पास अपना शरीर आदि जो कुछ भी है वह सब हमारा नही है अपितु हमे परमात्मा से निःशुल्क मिला है। यह भी निवेदन करना है कि यज्ञ करने से निर्धनता दूर होने सहित मनुश्य की सभी शुभ कामनायें पूर्ण होती हैं। अतः सबको यज्ञ करना चाहिये।

आजकल हम आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं में वार्षिकोत्सव आदि अनेक अवसरों पर बहुकुण्डीय यज्ञों का प्रचलन देखते हैं। हमसे हमारे एक ऋषिभक्त मित्र ने पूछा है कि क्या ऋषि ने बहुकुण्डीय यज्ञ का कहीं विधान व उल्लेख किया है? जहां तक हमारी जानकारी है ऋषि ने ऐसा नही किया है। उन्हें सम्भवतः इसकी आवष्यकता नहीं हुई। आर्यसमाज के उत्सवों में अधिक लोगों के आने पर सब यज्ञ में आहुतियां दे सकें और इसके बाद वह यज्ञ को अपने जीवन का स्थाई अंग बनायें, यही भावना बहुकुण्डीय यज्ञों के पीछे प्रतीत होती है। अनेक कुण्डों, तीन से पांच में यदि यज्ञ किया जाता है तो वह शोभायमान होता है। लोग भक्तिभाव से यजमान बनते हैं और श्रद्धापूर्वक यज्ञ में आहुतियां देते हैं। वैदिक काल में सभी लोग अपने घरों पर यज्ञ करते थे जिससे देश का वायु व जल शुद्ध होने से देशवासी रोगों से मुक्त रहते थे। ऋषि ने भी लिखा है कि यदि वर्तमान में सर्वत्र यज्ञ होने लगे तो देश पहले की तरह रोगों से मुक्त व सुख–स्मृद्धि आदि से युक्त हो जाये। बहुकुण्डीय यज्ञ करने में हमें कोई दोष दृश्टिगोचर नहीं होता यदि आयोजक इसे धर्म प्रचार की भावना से करते हैं। इसके पीछे आयोजकों का किसी प्रकार का प्रलोभन नहीं होना चाहिये। बहुकुण्डीय यज्ञ में यज्ञ में विहित गोघृत, वनस्पति, ओषधियों, मिष्ट, पोशक एवं सुगन्धित पदार्थों से जितनी अधिक आहुतियां दी जायेंगी उतना ही वातावरण पुष्ट व शुद्ध होगा। हमने इसी माह वैदिक साधन आश्रम तपोवन तथा आर्यसमाज लक्ष्मण चौक में बहुकुण्डीय यज्ञ देखे हैं। यहां अधिकतम् चार या पांच यज्ञ कुण्डों में यज्ञ किया गया। सब यज्ञ करने वाले यजमानों में पूर्ण श्रद्धाभाव देखा गया। यहां यजमान बनने का किसी से कोई शुल्क भी नहीं लिया जाता। अतः हमें इसमें किसी प्रकार का कोई दोष दृष्टिगोचर नहीं होता। यज्ञ के नाम से यदि कोई कहीं दुकानदारी चलाता है तो वह नहीं होना चाहिये।

यज्ञ को देवयज्ञ कहा जाता है। इसमें चेतन एवं जड़ देवों की पूजा व सत्कार होता है। अग्नि में गोघृत व यज्ञ सामग्री की आहुति से वायु, जल, अन्न, ओशधियों की पवित्रता होती है। घर का वायुमण्डल सुगन्धित होकर मन व आत्मा को प्रसन्न व सन्तुष्ट करने के साथ परिवारजनों को रोगों से दूर रखता है। भोपाल जैसी गैस त्रासदी होने पर भी याज्ञिक परिवार की रक्षा देखी गई है। यज्ञ से यज्ञकर्ता रक्षित होते हैं। ईश्वर का सहाय व आषीर्वाद मिलता है। हमारा वर्तमान जन्म व परजन्म भी सुधरता है। यज्ञ एक षुभ व पुण्य कर्म होने से इसका सुख रूपी फल भी हमें अवष्य मिलता है। यज्ञ से प्राणीमात्र को सुख का लाभ होता है। इस कारण से यज्ञ श्रेष्ठतम् कर्म है और हम सबको इसका नित्य प्रति अवश्य सेवन करना चाहिये। ओ३म् शम्।

******

1. *पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे।*

   न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।

2. *विज्ञापन से सम्पादक के विचारों का मिलना, आवश्यक नहीं सम्पादक उस की किसी भी प्रकार जिम्मेवारी नही लेता।*

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें

पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डबार, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH, GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL & All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sector 20-D, Chandigarh

LIC Agent has many lessons for us

Col. D.S. Cheema (Retd)

Even after attaining enviable height Air Marshal Arjan Singh was a humbly personified

Patience, politeness, courtesy and humility are underrated virtues in the modern world, but they play a significant role in making our life happy, success in family and interpersonnel relationships and ofcourse career building. With all the talents & degrees, if you feel at one stage of life that you could not reach where you should have been then culprit could be your not having these virtues. This story will tell how these virtues can help you to even charm a person like Hitler.

The greatest tragedy to have visited united India was partition, which uprooted millions of families like ours. The invisible hand of destiny brought us to a small border town Qadian in Gurdaspur, known as the religious headquarters of the Ahmadiyas. While fleeing to Pakistan, Muslims had left their huge houses. My father had purchased one such house with a lawn in front, at the princely sum of Rs 4,000 in 1948. (One multi-storeyed building was known by the name of its famous owner, Sir Zafarullah Khan, who rose to become the Chief Justice of International Court of Justice.)

My father liked to use the front lawn, with a few chairs, for his small darbar. I started recognising the faces of all the regular visitors, and even interacting with some of them.

One of the visitors was a polite, stocky man in his thirties, who would continue sitting in one of the chairs for hours, even when everyone had left. I later learnt that he was one of the three LIC agents in the town who thought my father could give him some business. He would park his bicycle near the gate, smilingly greet everyone, including us, the children, with a polite 'Sat Sri Akal' and kept standing until someone told him to sit.

My father was too decent a man and would never be rude by refusing to meet anyone who came, but my mother would often ask me to tell him that father was not at home, even when he was gardening in the backyard. The man wouldn't budge and kept smiling sheepishly, because he knew that he was being fed lies. He had a fund of anecdotes and proverbs which he would narrate to anyone who cared to listen, especially in the absence of senior members of the family. Ultimately, when my father would emerge, he would get up to touch his feet and settle down again in the same chair.

Speaking to my father, he gave an impression of mingled fascination. Patience is an underrated virtue in the modern world, but this man was astute to know that nothing could be created suddenly, and to be able to eat a ripe fruit one needed time for the plant to blossom into a tree and bear fruit which must ripen before one could have it. He understood that he was an unwelcome guest, but even all the obvious indication of indifferent behaviour made no difference to him. He would reappear the next day.

He also had the least understood quality of success, humility. By using this rare quality, he sold three policies: one of Rs 15,000 to my father and two of Rs 10,000 each to my elder sisters. He later shifted to Jalandhar and retired as a senior agent. I had the opportunity to visit him; he had not lost any of his old charms of politeness, courtesy and humility.

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Mrs Sudesh Gupta celebrating her grand children's birthday with the Ashram children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

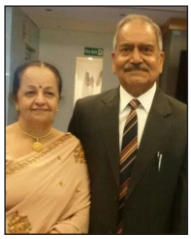

श्रीमती एवं श्री सुशील कुमार मग्गु

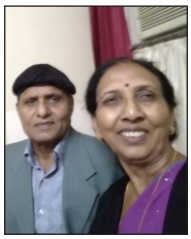

श्रीमती एंव श्री आचार्य सुरेन्द्र

श्री सुरेन्द्र गुप्ता

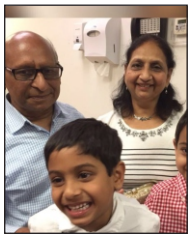

डा. एम.पी. गुप्ता एवं सुदेश गुप्ता

श्रीमती एवं श्री भसीन

RNI NO. CHABIL/2012/47744

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in